वर्णमाला-गीतावलि

(हँसते-खेलते संस्कृत)

सम्पादक

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

(सम्पादक-संस्कृतप्रचार-पुस्तकमाला)

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय

वाराणसी।

प्रकाशक
सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय
डी० ३८/११० हौजकटोरा, वाराणसी ।

आवृत्ति द्वितीय
संख्या एक हजार
मूल्य दो रुपये

मुद्रक :—
ओंकार कुशवाहा
हितैषी प्रिंटिंग वर्क्स,
नीचीबाग, वाराणसी ।
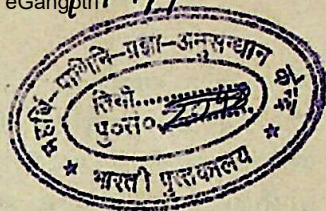
आवश्यक निवेदन

उद्देश्य एवं उपयोगिता

जिस प्रकार हिन्दी आदि भाषाओं की वर्णमाला सिखाते समय अ आदि स्वरवर्णों तथा क आदि व्यंजन वर्णों के साथ "अनार कबूतर" आदि उन वर्णों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों को भी वतलाने की रीति प्रचलित है और उसके लिए नाना प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित हैं उसी प्रकार संस्कृत वर्णमाला के स्वर-व्यंजन वर्णों के साथ उन वर्णों से आरंभ होने वाले कतिपय व्यवहारोपयोगी संस्कृत शब्दों से बालकों को परिचित करा देने की दृष्टि से इस पुस्तक का सम्पादन किया गया है। यद्यपि इस ढंग की यह पहली पुस्तक नहीं है, फिर भी इस की कई विशेषतायें हैं जिनका उल्लेख आगे किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में स्वरों, व्यंजनवर्णों तथा संयुक्ताक्षरों के साथ जितने शब्द दिये गये हैं उनकी संख्या १०४९ के लगभग है। इनमें संख्या शब्द ८००, क्रियायें २०९ तथा विशेषण ३९ हैं। इस संख्या में से यदि केवल स्थानपूर्ति के लिये दिये गये शब्दों को छांट दिया जाय तब भी एक हजार शब्द उपयोगी बच जाते हैं। अतः वर्णमाला के साथ अपनी-अपनी मातृभाषा के शब्दों से परिचित हो जाने के बाद यदि बालक इस पुस्तक को भी पढ़ जायें तो उन्हें बहुत कम परिश्रम में ही मनोरंजन के साथ बहुत से व्यवहारोपयोगी संस्कृत शब्दों का भी ज्ञान हो सकता है। जो प्राथमिक पाठशालायें (प्राइमरी स्कूल) संस्कृत विद्यालयों में चलती हैं वहाँ के बालकों को तो प्राइमरी कक्षा समाप्त होने तक इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ा देना चाहिए। फिर जो लोग अपने बालकों को निश्चित रूप से आगे संस्कृत पढ़ाना चाहते हों उनके लिये तो अपने बालकों को आरंभ से ही इस पुस्तक को पढ़ा देना सर्वथा उपयोगी होगा ही।

पुस्तक की विशेषतायें

१—इस पुस्तक में स्वर एवं व्यंजन वर्णों के साथ जो शब्द दिए गये हैं उनका चयन और संयोजन इस प्रकार किया गया है कि विद्यार्थी वर्णों के साथ उन शब्दों को अनेक लयों में पढ़ सकते हैं और इस प्रकार शब्द सीखने के साथ-साथ कविता और संगीत का भी आनन्द ले सकते हैं।

---

१. देखिये–आचार्य कपिलदेव शर्मा प्रणीत 'देवनागर वर्णमाला" नामक सचित्र एवं सर्वाङ्गसुन्दर पुस्तक। मूल्य-साठ पैसे। मिलने का पता–पुस्तक भवन, राँची, बिहार।

२—वर्णमाला की अन्य पुस्तकों में वर्णों के लिये केवल एक या दो ही शब्द दिये गये हैं परन्तु इस पुस्तक में एक-एक वर्ण के लिये अनेक शब्द दिये गये हैं। जो वर्ण और शब्द एक लय में आते हैं उन्हें एक जगह रखा गया है। इस प्रकार लयभेद से वर्णों और शब्दों के अनेक उदाहरण दिये गये हैं।

३—इसके अतिरिक्त पहले एक-एक वर्ण के साथ एक-एक शब्द को देकर पीछे एक-एक वर्ण के साथ तीन-तीन शब्द भी दिये गये हैं जो लय के साथ पढ़े जाते हैं और बहुत रुचिकर प्रतीत होते हैं।

४—इस पुस्तक में वर्णों के साथ न केवल शब्द ही अपितु क्रियायें भी दी गई हैं। संस्कृत की जितनी क्रियायें प्रायः दैनिक व्यवहार और साधारण संस्कृत ज्ञान के लिए उपयोगी हैं वे सब वर्णों के साथ अनेक पर्यायों में संगृहीत कर दी गई हैं।

५—वर्णमाला की अन्य पुस्तकों में स्वर-व्यंजन वर्णों के साथ एक या दो शब्द तो दे दिये गये हैं पर व्यंजनवर्णों की स्वराक्षरी (बारह खड़ी) के साथ शब्द नहीं दिये गए हैं। परन्तु इस पुस्तक में स्वराक्षरी के साथ भी शब्द दिए गए हैं जिस से छात्रों को पर्याप्त संस्कृत शब्दों का ज्ञान हो जाता है। इन शब्दों की योजना लयबद्ध रूप में ही की गई है ताकि छात्रों को ये शब्द भी सरलता और मनोरंजन के साथ कण्ठस्थ हो जांय।

६—स्वराक्षरी के बाद पुस्तक में संयुक्ताक्षरों तथा उनसे बने हुये शब्दों की भी एक लम्बी तालिका दी गई है जिसके पढ़ने और लिखने का समुचित अभ्यास हो जाने से छात्रों को अपनी-अपनी भाषा के पढने-लिखने में भी बहुत सहायता मिल सकती है।

७—संयुक्ताक्षरों के बाद संख्यावाचक शब्द तथा पूरणार्थक संख्यावाचक शब्द भी दे दिये गये हैं। प्राइमरी पाठशाला के छात्र यदि प्रार्थना के बाद हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत में भी अपनी गिनती कर लिया करें तो अल्प समय में ही उन्हें ये संस्कृत के संख्यावाची शब्द कण्ठस्थ हो जायेंगे।

८-इस पुस्तक की अन्तिम और सबसे नवीन बात यह है कि इसमें हिन्दी के आधार पर संस्कृत में १० तक का पहाड़ा भी दे दिया गया है। यह बिलकुल नवीन प्रयोग है। छात्रों को हिन्दी की तरह संस्कृत के पहाड़ा को भी सामूहिक रूप से कहने का अभ्यास करना चाहिये।

संक्षेप में यही इस पुस्तक की विशेषतायें हैं जो वर्णमाला की अन्य पुस्तकों में उपलब्ध नहीं हैं।

त्रुटियाँ

इस पुस्तक को साङ्गोपाङ्ग रूप से सुन्दर तथा परिपूर्ण बनाने में कतिपय अनिवार्य कारणों से कुछ त्रुटियाँ भी रह गई हैं। इन कारणों में कुछ तो भाषा सम्बन्धी हैं और कुछ साधन-सम्बन्धी भी। जहाँ तक संस्कृत वर्णमाला की रचना के कारण त्रुटियाँ रह गई हैं वे निम्नलिखित हैं—

१—देवनागर वर्णमाला के ॠ लृ ङ ञ ण आदि वर्णों से आरम्भ होने वाले शब्द संस्कृत में नहीं मिलते। अतः इनके लिए ऐसे ही शब्द देने पड़े हैं जिनके मध्य अथवा अन्त में इनका प्रयोग हुआ है। ङ और ञ इन दो वर्णों का प्रयोग तो अन्त या मध्य में भी हलन्त के रूप में ही हुआ है क्योंकि इनका सस्वर प्रयोग किसी शब्द में नहीं मिलता।

२—इसी प्रकार झ ट ठ ड ढ थ फ ष आदि वर्णों से आरंभ होने वाले शब्दों की संख्या भी संस्कृत में अत्यन्त अल्प है। अतः इन वर्णों के लिये भी कहीं-कहीं ऐसे ही शब्द देने पड़े हैं जिनके मध्य अथवा अन्त में ही इनका प्रयोग हुआ है।

३— यह त्रुटि स्वराक्षरी के शब्दों में तो और भी बढ़ गई है। क्योंकि व्यंजन वर्णों में झ, टवर्ग, थ, फ, ष, य, आदि ऐसे वर्ण हैं जिनमें ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ आदि स्वर विरले ही मिलते हैं। अतः ऐसे स्थलों पर शब्दरूपों और धातुओं का प्रयोग कर किसी प्रकार स्थानपूर्ति करनी पड़ी है। फिर भी दो-चार स्थल ऐसे भी रह गये हैं जिनकी स्थानपूर्ति भी नहीं की जा सकती है। ऐसे स्थलों पर लयभंग न हो इसके लिये वहाँ पर 'शून्यम्'' यह पद जोड़ दिया गया है।

४—इस पुस्तक में वर्णों और शब्दों को लयवद्ध रूप में ही संकलित करने का निश्चय था और वैसा ही किया भी गया है। परन्तु इस निश्चय के कारण त्रुटि यह हो गई है कि लय में न बैठ सकने के कारण कहीं-कहीं सरल एवं प्रचलित शब्द छूट गये हैं और उनके स्थान पर कठिन और अप्रचलित शब्दों को रखना पड़ा है फिर भी कहीं-कहीं उपयुक्त शब्दों के अभाव में लयभंग भी करना पड़ा है और छोटे-बड़े शब्दों का एक साथ सन्निवेश किया गया है।

५—सबसे बड़ी त्रुटि इस पुस्तक के प्रकाशन में यह हुई है कि न तो यह सचित्र है, न विविध रंगों में है और न दोरंगा प्रकाशन ही सुन्दर और आकर्षक है। वर्णमाला की पुस्तक होने के कारण इसमें इन गुणों का होना आवश्यक था परन्तु अर्थ की कमी के कारण ऐसा नहीं किया जा सका। संभव है, किसी सहृदय सहायक की कृपा से अग्रिम संस्करण में इन त्रुटियों का निराकरण हो सके।

६—अन्य जो प्रूफसंशोधन तथा मुद्रण की त्रुटियाँ रह गई हैं इनके सुधार के लिए अन्त में एक शुद्धाशुद्ध की सूची लगा दी गई है। तदनुसार छात्रों तथा शिक्षकों को पुस्तक में सुधार कर लेना चाहिए।

कुछ आवश्यक निर्देश

१—इस पुस्तक में, जैसा कि इसका नाम है, वर्णों तथा शब्दों के समस्त उदाहरण लयबद्ध रूप में लिखे हैं। अतः प्रत्येक उदाहरण को कविता या गीत के समान किसी लय में ही पढ़ना चाहिये, बिना लय के नहीं। एक-एक उदाहरण २-३ लयों में भी पढ़ा जा सकता है। अध्यापक और छात्र इस पर बराबर ध्यान रखेगें।

२—वर्णों के साथ शब्दों का उच्चारण करते समय उनके बीच में भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न शब्दों को मिला कर कहने की प्रथा है। जैसे उत्तर-प्रदेश में कहीं-कहीं वर्णों और शब्दों के बीच में 'माने" शब्द लगा दिया जाता है। यथा—क माने कबूतर, ख माने खरगोश" इत्यादि। तदनुसार यदि छात्र चाहें तो अपने-अपने प्रदेश की प्रथा के अनुसार इस पुस्तक के भी वर्णों और शब्दों के बीच किसी शब्द को लगा कर बोल सकते हैं।

३—पुस्तक में वर्णों के साथ जो शब्द दिये गये हैं वे विभक्तिसहित दिये गये हैं परन्तु नीचे अर्थ के साथ उनका विभक्तिरहित मूल रूप भी दे दिया गया है। इसी प्रकार क्रियाओं के साथ भी नीचे उनके मूल धातु भी दे दिये गये हैं। कहीं-कहीं टिप्पणी देकर भी मूल शब्दों का उल्लेख कर दिया गया है। पढ़ते-पढ़ाते समय छात्रों तथा अध्यापकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिये जिससे मूल शब्दों तथा विभक्तिसहित पदों के अन्तर का ज्ञान हो सके।

४—इस पुस्तक में जो शब्द दिये गये हैं उनमें लिङ्ग का निर्देश नहीं किया गया है। क्योंकि आरम्भ में बालकों को केवल मूल शब्द और उनका प्रथमा के एकवचन का रूप ही बतला देना पर्याप्त है। फिर जो छात्र लिङ्ग का भी ज्ञान करना चाहें वे अध्यापकों से पूछ कर उसकी जानकारी कर सकते हैं।

५—उपर्युक्त नियम के विपरीत व्यंजन वर्णों की स्वराक्षरी तथा संयुक्ताक्षर प्रकरण में जो विभक्तिसहित पद दिये गये हैं उनके साथ उनका मूल शब्द न देकर केवल अर्थ ही दे दिया गया है। विद्यार्थियों को चाहिए कि स्वर एवं व्यंजन वर्णों के प्रकरण में प्रदत्त शब्दों के मूल एवं विभक्तिसहित रूपों के अनुसार यहाँ भी विभक्तिसहित पदों से उनके मूल शब्दों को समझ लेने का प्रयास करें। जहाँ सन्देह हो वहाँ अध्यापकों से पूछ कर उसका निवारण कर लेना चाहिये। अध्यापकों को चाहिए कि वे आवश्यकतानुसार स्वयं इस बात को छात्रों को बतला दिया करें।

६—संयुक्ताक्षर प्रकरण में अनेक विशेषण शब्द भी आये हैं जिनके सामने संक्षेप में "वि०" लिख दिया गया है। परन्तु पिछले प्रकरण में कहीं-कहीं यह निर्देश छूट गया है। अध्यापकों को चाहिये कि वे वैसे स्थलों पर ऐसा निर्देश कर दिया करें।

७—इस पुस्तक में वर्णों के साथ जितने शब्द और क्रियायें उल्लिखित हैं उन्हें न केवल छात्रों को कण्ठस्थ ही करना चाहिये प्रत्युत उनका प्रतिदिन के बोलचाल में व्यवहार भी करना चाहिये। पुस्तक में जो क्रियायें दी गई हैं उनका विद्यार्थी यदि किसी भी काल. किसी भी पुरुष तथा किसी भी वचन में प्रयोग करें तो कोई हानि नहीं। ऐसा प्रयत्न होना चाहिये कि छात्र कुछ सकेत के साथ इन्हीं शब्दों एवं क्रियाओं की सहायता से संस्कृत में किसी सीमा तक अपना अभिप्राय प्रगट कर सकें।

विद्वज्जनों से निवेदन

अब मैं अन्तरङ्ग एवं वहिरङ्ग दोनों दृष्टियों से इस पुस्तक को अधिक उपयोगी एवं आकर्षक बनाने के सम्बन्ध में विद्वज्जनों से कुछ सुझाव देने के लिये निवेदन करना चाहता हूं ताकि इसका अग्रिम प्रकाशन सर्वाङ्गपूर्ण और सर्वोत्तम हो सके। इस सम्बन्ध में जो सज्जन कोई नवीन उपयोगी सुझाव देंगे उनका मैं अत्यन्त आभारी रहूँगा।

२० मार्च १९७९ ई०
वाराणसी।

विनीत
सम्पादक

विषय सूची

वर्णमाला-गीतावलि

वर्ण (अक्षर) भेद

स्वर वर्ण (अच्) संख्या १३

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ (अं अँ अः)

ह्रस्व स्वर—अ इ उ ऋ ऌ

दीर्घ स्वर—आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ

अनुस्वार— ं (शंकर)
अनुनासिक ँ (पुँस्कोकिल)
विसर्ग : (रामः कृष्णः)

अनुस्वार, अनुनासिक और विसर्ग में तीनों स्वर एवं व्यञ्जन दोनों में गिने जाते हैं।

व्यञ्जन वर्ण (हल्) (संख्या ३३)

क	ख	ग	घ	ङ	कवर्ग—कु
च	छ	ज	झ	ञ	चवर्ग—चु
ट	ठ	ड	ढ	ण	टवर्ग—टु
त	थ	द	ध	न	तवर्ग—तु
प	फ	ब	भ	म	पवर्ग—पु

ये २५ वर्ण स्पर्श कहे जाते हैं।

य र ल व } ये ४ वर्ण अन्तःस्थ कहे जाते हैं।

श ष स ह } ये ४ वर्ण उष्मा कहे जाते हैं। इनमें श को तालव्य, ष को मूर्धन्य तथा स को दन्त्य कहा जाता है।

क्ष त्र ज्ञ } ये ३ वर्ण संयुक्ताक्षर कहे जाते हैं। इनमें क्ष क् और ष् के योग से, त्र त् और र् के योग से तथा ज्ञ ज् और ञ् के योग से बना है। अतः इन तीनों वर्णों की स्वतन्त्र रूप से गणना नहीं होती।

स्वर-वर्णों के गीत

प्रथम उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

अ	**अन्नम्**	**आ**	**आम्रम्**	**इ**	**इक्षुः**	**ई**	**ईशः**
अन्न	अनाज	आम्र	आम	इक्षु	ईख	ईश	प्रभु
उ	**उष्ट्रः**	**ऊ**	**ऊर्णा**	**ऋ**	**ऋक्षः**	**ॠ** ×	**मातॄः** +
उष्ट्र	ऊँट	ऊर्ण	ऊन	ऋक्ष	भालू	मातॄः	माताओंको
लृ ×	**क्लृप्तम्**	**ए**	**एकः**	**ऐ**	**ऐक्यम्**	**ओ**	**ओष्ठः**
क्लृप्त	बनाया हुआ	एक	एक	ऐक्य	एकता	ओष्ठ	ओठ
		औ	**औष्ण्यम्**	**अं**	**अंशुः**		
		औष्ण्य	गर्मी	अंशु	किरण		

द्वितीय उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

अ	**अग्निः**	**आ**	**आलुः**	**इ**	**इन्द्रः**	**ई**	**ईषा**
अग्नि	आग	आलु	आलू	इन्द्र	इन्द्र	ईषा	हरिस
उ	**उदरम्**	**ऊ**	**ऊर्मिः**	**ऋ**	**ऋषभः**	**ॠ**	**पितॄन्** +
उदर	पेट	ऊर्मि	लहर	ऋषभ	बैल	पितॄन्	पिताओंको
लृ	**क्लृप्तिः**	**ए**	**एला**	**ऐ**	**ऐन्द्रिः**	**ओ**	**ओजः**
क्लृप्ति	बनावट	एला	इलायची	ऐन्द्रि	इन्द्रपुत्र	ओजस्	बल
		औ	**औघः**	**अं**	**अंशः**		
		औघ	प्रवाह	अंश	हिस्सा		

× संस्कृत में ॠ तथा लृ से आरम्भ होने वाले शब्द नहीं होते। अतः इनके लिये ऐसे ही शब्द दिये गये हैं जिनके मध्य अथवा अन्त में ये स्वर पड़ते हैं।

\+ मातॄः पितॄन् ये दोनो पद मातृ पितृ शब्द के द्वितीया के बहुवचन के रूप हैं।

तृतीय उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

अ अरविन्दम्	आ आगारः	इ इर्वारुः	ई ईशानी
अरविन्द कमल	आगार घर	इर्वारु ककड़ी	ईशानी दुर्गा
उ उलूखलम्	ऊ ऊर्णायुः	ऋ ऋग्वेदः	ॠ मातॄणम्
उलूखल ओखल	ऊर्णायु मकड़ा	ऋग्वेद ऋग्वेद	मातॄणाम् मातृ-ऋण
लृ क्लृप्ताङ्गः	ए एरण्डः	ऐ ऐश्वर्यम्	ओ ओङ्कारः
क्लृप्ताङ्ग सुसज्जित	एरण्ड रेड	ऐश्वर्य धन-सम्पत्ति	ओंकार ओंकार
औ औदार्यम्	अं अंगारः		
औदार्य उदारता	अंगार अंगार		

चतुर्थ उदाहरण (क्रियायें)

अ अस्ति	अ अर्चति	अ अर्जति	आ आस्ते
है (अस्)	पूजा करता है (अर्च)	कमाता है [अर्ज]	बैठता है (आस्)
इ इच्छति	उ उदयति	ऋ ऋच्छति	ए एजति
चाहता है (इष्)	उगता है (उत् अय)	जाता है (ऋच्छ)	काँपता है (एज)

पंचम उदाहरण (क्रियायें)

अ अवगच्छति	आ आगच्छति	उ उत्तिष्ठति	उ उपविशति
समझता है (अव-गम्)	आता है (आ-गम्)	उठता है (उत्-स्था)	बैठता है (उप-विश)
आ आकर्षति	आ आह्वयति	उ उद्गच्छति	अं अंकयति
खींचता है (आ-कृष)	बुलाता है (आ-ह्वे)	उगता है (उद्-गम्)	आंकता है (अंक)

व्यञ्जन-वर्णों के गीत

प्रथम उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

क करः   ख खरः   ग गजः   घ घटः   ङ उदङ्

कर हाथ   खर गदहा   गज हाथी   घट घड़ा   उदञ्च् उत्तर

च चमूः   छ छदिः   ज जलम्   झ झषः   ञ उकञ्[1]

चमू सेना   छदिस् छत्पर   जल पानी   जष मछली   एक प्रत्यय

ट पटः   ठ शठः   ड गुडः   ढ दृढः   ण पणः

पट कपड़ा   शठ दुष्ट   गुड़ गुड़   दृढ़ मजबूत   पण पैसा

त तरुः   थ रथः   द दधि   ध धनुः   न नरः

तरु वृक्ष   रथ रथ   दधि दही   धनुष् धनुस   नर आदमी

प पशुः   फ फलम्   ब बकः   भ भटः   म मठः

पशु जानवर   फल फल   बक बगुला   भट योद्धा   मठ मठ

य यवः   र रथः   ल लता   व वटः

यव जौ   रथ रथ   लत लता   वट वरका तेड़

श शशः   ष वृषः   स सखा   ह हलः

शश खरहा   वृष वैल   सखि मित्र   हल हल

क्ष क्षतम्   त्र त्रपा   ज्ञ ज्ञाता[2]

क्षत घाव   त्रपा लज्जा   ज्ञता जानकारी

---

(१) एक कृत् प्रत्यय जिससे कामुक, भावुक आदि शब्द बनते हैं। (२) अभिज्ञ अभिज्ञता

द्वितीय उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

क	कमलम्	ख	खटिका	ग	गगनम्	घ	घटिका	ङ	रङ्गः
कमल	कमल	खटिका	खड़िया	गगन	आकाश	घटिका	घड़ी	रङ्ग	रङ्ग
च	चणकम्	छ	छगलः	ज	जननी	झ	झिल्ली	ञ	यजञः
चणक	चना	छगल	बकरा	जननी	माता	झिल्ली	झिंगुर	यजञ	यज्ञ
ट	लकुटः	ठ	कमठः	ड	डमरुः	ढ	ढक्का	ण	गणना
लकुट	लकड़ा	कमठ	कछुआ	डमरु	डमरु	ढक्का	ढाक	गणना	गिनती
त	तरणिः	थ	शपथः	द	दण्डः	ध	धरणी	न	नकुलः
तरणि	नौका	शपथ	सौगन्द	दण्ड	डंटा	धरणी	भूमि	नकुल	नेवला
प	पनसम्	फ	फलकम्	ब	बदरः	भ	भवनम्	म	मकरः
पनस	कटहल	फलक	तख्ता	बदर	बैर	भवन	घर	मकर	मगर

य	यमुना	र	रजकः	ल	लगुडम्	व	वरटः
यमुना	यमुनानदी	रजक	धोबी	लगुड	लाठी	वरट	बर्रे
श	शकटम्	ष	वृषभः	स	सलिलम्	ह	हरिणः
शकट	छकड़ा	वृषभ	बैल	सलिल	पानी	हरिण	हिरन

क्ष	क्षरणम्	त्र	त्रासः	ज्ञ	ज्ञप्तिः
क्षरण	टपकना	त्रास	भय	ज्ञप्ति	घोषणा

तृतीय उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

क कर्णः ख खड्गः ग गन्त्री घ घण्टा ङ सङ्गः
कर्ण कान खड्ग तलवार गन्त्री गाड़ी घण्टा घण्टा सङ्ग साथ
च चक्रम् छ छत्रम् ज जम्बूः झ झञ्झा ञ चञ्चुः
चक्र चक्का छत्र छत्ता जम्बू जामुन झञ्झा आँधीपानी चञ्चु चोंच
ट टंकः ठ कण्ठः ड नीडम् ढ गाढः ण बाणः
टंक टांका कण्ठ कंठ नीड घोंसला गाढ गाढा बाण बाण
त तक्रम् थ यूथम् द दन्तः ध धमनी न नप्ता
तक्र मट्ठा यूथ झुन्ड दन्त दांत धमनी नाड़ी नप्तृ नाती
प पत्रम् फ फुल्लम् ब बण्डः भ भङ्गा म मत्स्यः
पत्र पत्ता, चिट्ठी फुल्ल फूला हुआ वण्ड बाँड भङ्गा भांग मत्स्य मछली
य यज्ञः र रज्जुः ल लकुचः व वस्त्रम्
यज्ञ यज्ञ रज्जु रस्सी लकुच लीची वस्त्र कपडा
श शय्या ष षण्ढः स सक्तुः ह हंसः
शय्या सेज षण्ढ नपुंसक सक्तु सत्तू हंस हंस
क्ष क्षवथुः त्र त्राणम् ज्ञ ज्ञानम्
क्षवथु छींक त्राण रक्षा ज्ञान ज्ञान

चतुर्थ उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

क कुक्कुरः ख खण्डिका ग गर्दभः घ घोटकः ङ सङ्गमः
कुक्कुर कुत्ता खण्डिका खड़िया गर्दभ गदहा घोटक घोड़ा सङ्गम मिलना

च चन्द्रमाः छ छागलः ज जम्बुकः झ झल्लरी ञ अञ्जलिः
चन्द्रमस् चन्द्रमा छागल बकरा जम्बुक सियार झल्लरी झाल अञ्जलि अञ्जलि

ट टिट्टिभः ठ ठक्कुरः ड डिंडिमः ढ ढिंढिनी ण ब्राह्मणः
टिट्टिभ टिटिहरी ठक्कुर ठाकुर डिण्डिम ढिढोरा ढिंढिनी एक पौधा ब्राह्मण ब्राह्मण

त तस्करः थ सारथिः द दर्पणः ध धावकः न नापितः
तस्कर चोर सारथि यानचालक दर्पण आइना धावक दूत नापित नाई

प पर्कटी फ फाल्गुनः ब बालकः भ भल्लुकः म मक्षिका
पर्कटी पकड़ी फाल्गुन फागुन बालक लड़का भल्लुक भालू मक्षिका मक्खी

य याचकः र राक्षसः ल लेखकः व वानरः
याचक मांगनेवाला राक्षस राक्षस लेखक लिखनेवाला वानर वन्दर

श शष्कुली ष षड्गुणाः स सागरः ह होलिका
शष्कुली पूड़ी षड्गुणाः छ गुण सागर समुद्र होलिका होली

क्ष क्षत्रियः त्र त्राणदः ज्ञ ज्ञानवान्
क्षत्रिय क्षत्रिय त्राणद रक्षक ज्ञानवत् ज्ञानी

पञ्चम उदाहरण (संज्ञा-शब्द)

क कपाटम् ख खगोलः ग गवाक्षः घ घरट्टः ङ विहङ्गः

कपाटः केवाड़ी खगोल खगोल गवाक्ष झरोखा घरट्ट चक्की विहङ्ग पक्षी

च चकोरः छ गुलुच्छः ज जलौकाः झ झषाङ्कः ञ समज्ञा

चकोर चकोर गुलुच्छ गुच्छ जलौका जोंक झषाङ्क कामदेव समञ्जा सभा

ट पटीरः ठ कुठारः ड कडुम्बः ढ द्रढिष्ठः ण कृपाणः

पटीर चन्दन कुठार कुल्हाड़ा कड़म्ब डंठल द्रढिष्ठ मजबूत कृपाण तलवार

त तमालम् थ गृहस्थः द दरिद्रः ध धनाढ्यः न नगेशः

तमाल एक वृक्ष गृहस्थ गृहस्थ दरिद्र गरीब धनाढ्य धनी नगेश हिमालय

प पटोलः फ फणीन्द्रः ब बिडालः भ भरित्रम् म मयूरः

पटोल परवल फणीन्द्र शेष बिडाल बिल्ली भरित्र भर्ता मयूर मोर

य यवानी र रसालः ल लवङ्गः व वलाका

यवानी अजवाइन रसाल आम लवंग लौंग वलाका वकपंक्ति

श शलाका ष विषाणः स समुद्रः ह हसन्ती

शलाका सलाई वषाण सींघ समुद्र समुद्र हसन्ती अंगीठी

क्ष क्षमावान् त्र त्रिकोणः ज्ञ अभिज्ञः

क्षमावत् सहिष्णु त्रिकोण तिकोना अभिज्ञ जानकार

षष्ठ उदाहरण [क्रियायें]

क कृषति	ख खनति	ग गलति	घ घुटति
खींचता है [कृष]	खनता है [खन]	गलता है [गल]	घोटता है [घुट]
च चलति	छ छुपति	ज जपति	ज जयति
चलता है [चल]	छूता है [छुप]	जपता है [जप]	जीतता है [जि]
ज ज्वलति	त तपति	द दिशति	ध धरति
जलता है [ज्वल]	तपता है [तप]	देता है [दिश]	पकड़ता है [धृ]
न नयति	प पचति	प पतति	फ फलति
ले जाता है [नी]	पकाता है [पच]	गिरता है [पत]	फलता है [फल]
भ भजति	भ भवति	म मिलति	य यजति
भजता है [भज]	होता है [भू]	मिलता है [मिल]	यज्ञ करता है [यज]
र रटति	ल लिखति	ल लगति	ल लुठति
रटता है [रट]	लिखता है [लिख]	लगता है [लग]	लुढकता है [लुठ]
व वदति	व वहति	व वसति	व विशति
बोलता है [वद]	वहता है, ढोता है [वह]	बसता है [बस]	घुसता है [विश]
श श्वयति	स सरति	स स्मरति	स सृजति
सूजता है [श्वि]	सरकता है [सृ]	सुमिरता है [स्मृ]	सिरजता है [सृज]

ह हसति	ह हरति
हँसता है [हस]	हरता है [हृ]

इस उदाहरण में एक-एक अक्षर के लिए दो तीन क्रियायें भी दे दी गई हैं।

सप्तम उदाहरण (क्रियायें)

क कुरुते — करता है (कृ)
क कुप्यति — कोप करता है (कुप)
ग गर्जति — गरजता है (गर्ज)
ज जनयति — पैदा करता है (जन)

त तनुते — फैलाता है (तन)
त तक्षति — छीलता है (तक्ष)
द ददते — देता है (दद)
न नयते — ले जाता है (नी)

प पृच्छति — पूछता है (प्रच्छ)
ब बुक्कति — भूँकता है (बुक्क)
भ भृज्जति — भूजता है (भ्रस्ज)
ल लुञ्चति — नोंचता है (लुञ्च)

अष्टम उदाहरण (क्रियायें)

क कम्पते — काँपता है (कम्प)
क कासते — खाँसता है (कास)
क कूर्दते — कूदता है (कुर्द)
घ घोटते — घोटता है (घुट)

ज जायते — पैदा होता है (जन)
द दीप्यते — चमकता है (दीप)
ब बुध्यते — बूझता है (बुध)
ब बाधते — बाधा करता है (बाध)

भ भक्षयति — खाता है (भक्ष)
भ भ्रंशते — गिरता है (भ्रंश)
म मन्यते — मानता है (मन)
य याचते — मांगता है (याच)

र राजते — शोभित होता है (राध)
र रोचते — रुचता है (रुच)
र रञ्जयति — रंगता है (रञ्ज)
ल लंघते — लांघता है (लंघ)

ल लज्जते — लजाता है (लस्ज)
व वर्द्धते — बढ़ता है (वृध)
श शोभते — शोभित होता है (शुभ)
श शिक्षते — सीखता है (शिक्ष)

ह ह्रेषते — हिनहिनाता है (ह्रेष)

नवम उदाहरण (क्रियायें)

(निम्नलिखित क्रियाओं को हिन्दी अर्थ के साथ भी लयबद्ध रूप में पढ़ा जा सकता है)

क करोति	क कथयति	ख खादति	ग गच्छति
करता है (कृ)	कहता है (कथ)	खाता है (खाद)	जाता है (गम्)
ग गणयति	ग गायति	घ घर्षति	च चिनुते
गिनता है (गण)	गाता है (गै)	घिसता है (घृष)	चुगता है (चि)
च च्यवते	छ छलयति	ज जीवति	ज जल्पति
चूता है (च्यु)	छलता है (छल)	जीता है (जीव)	बकता है (जल्प)
ठ तिष्ठति	ड डयते[1]	ढ द्रढयति	ण प्रणमति[2]
रुकता है [स्था]	उड़ता है [डी]	कसता है [दृढ़]	झुकता है [नम]
त त्रस्यति	द ददाति	ध धत्ते	न निवसति[3]
डरता है [त्रस]	देता है [दा]	रखता है [धा]	रहता है [वस]
प प्रविशति[4]	फ फुल्लति	ब ब्रवीति	भ भुंक्ते
घुसता है [विश]	खिलता है [फुल्ल]	कहता है [ब्रू]	खाता है [भुज]
म मन्थति	म म्रियते	र रोदिति	र रचयति
मथता है [मन्थ]	मरता है [मृ]	रोता है [रुद]	रचता है [रच]
ल लभते	व वपते	व वयते	श शेते
पाता है [लभ]	बोता है [वप]	बुनता है [वे]	सोता है [शी]
श शृणोति	स सहते	स सीव्यति	ह हरते
सुनता है [श्रु]	सहता है [सह]	सीता है [सीव]	हरता है [हृ]

१—इस क्रिया का उत् उपसर्ग के साथ ही प्रयोग होता है। जैसे –उत्–डयते, उड्डयते (उड़ता है)। २, ३, ४—इन तीनों में नि और प्र उपसर्ग लगा हुआ है।

दशम उदाहरण (प्रेरणार्थक क्रियायें)

(निम्नलिखित क्रियाओं को हिन्दी अर्थ के साथ भी लयबद्ध रूप में पढ़ा जा सकता है)

क कारयति	क कम्पयति	ख खादयति	ख खेलयति
कराता है [कृ]	कँपाता है [कम्प]	खिलाता है [खाद]	खेलाता है [खेल]
ग गूहयति	घ घ्रापयति	च चाषयति	च चालयति
छिपाता है [गुह]	सुंघाता है [घ्रा[	चखाता है [चष]	चलाता है [चल]
च चारयति	छ छादयति	ज ज्वालयति	ज्ञ ज्ञापयति
चराता है [चर]	छवाता है [छद]	जलाता है [ज्वल]	बताता है [ज्ञा]
ड डाययति	त तापयति	द दर्शयति	द दापयति
उड़ाता है [डी[	तपाता है [तप]	दिखाता है [दृश]	दिलाता है [दा]
द दोलयति	ध धावयति	न नर्तयति	प पाठयति
डुलाता है [दुल]	धुलाता है [धाँव]	नचाता है [नृत]	पढ़ाता है [पठ]
प पाययति	प पीडयति	फ फुल्लयति	ब बोधयति
पिलाता है (पा)	दुखाता है (पीड)	फुलाता है (फुल्ल)	जगाता है (बुध)
ब बुक्कयति	ब बोधयति	भ भाययति	भ भोजयति
भुँकाता है (बुक्क)	बुझाता है (वुध)	डराता है (भी)	खिलाता है (भुज)
भ भ्रामयति	म मज्जयति	म मोचयति	म मिश्रयति
घुमाता है (भ्रम)	डुबाता है (मज्ज)	छुड़ाता है (मुञ्च)	मिलाता है (मिश्र)
य यातयति	य योधयति	र रोदयति	ल लेखयति
सताता है (या)	लड़ाता है (युध)	रुलाता है (रुद)	लिखाता है (लिख)

१—इसका प्रयोग प्रायः उत् उपसर्ग के साथ "उड्डाययति" इस रूप में किया जाता है।

ल लोपयति ल लोभयति व वादयति व वापयति
मिटाता है (लुप) लुभाता है (लुभ) बनाता है (वद) बोआता है (वप)
व वाहयति व वासयति व वाययति श शाययति
ढोआता है [वह] बसाता है [वस] बुनाता है [वे] सुलाता है [शी]
श शोषयति श शेषयति स सज्जयति स सीवयति
सुखाता है (शुष) बँचाता है (शिष) सजाता है (सज्ज) सिलाता है (सीव)
स स्वापयति ह हारयति ह हासयति
सुलाता है (स्वप) गँवाता है (हृ) हँसाता है (हस)

एकादश उदाहरण (एक स्वरवाले अनेक शब्द)

अ अन्नं अग्निः अमृतम्
अन्न । आग । अमृत

आ आम्रम् आलुः आम्लम्
आम । आलू । खट्टा ।

इ इक्षुः इन्दुः इन्द्रः
ईख । चन्द्रमा । इन्द्र ।

ई ईशः ईषा ईर्ष्या
ईश्वर । हरिस । डाह ।

उ उष्ट्रः उदरम् उष्णम्
ऊँट । पेट । गर्म

ऊ ऊर्णा ऊर्ध्वम् ऊर्जा
ऊन । ऊपर । शक्ति ।

ऋ ऋक्षः ऋक्थम् ऋषभः
भालू । हक । बैल

ए एला एणः एकः
इलायची । हरिण । एक

ऐ ऐन्द्री ऐलः ऐक्यम्
पूर्व दिशा । राजा पुरूरवा । एकता ।

ओ ओघः ओष्ठः ओल्लः
प्रवाह । ओठ । ओल ।

औ औघः औड्रः औष्ण्यम्
प्रवाह । उड़िया । उष्णता

अं अंशः अंकः कंसः
हिस्सा । गोदी । कटोरा ।

द्वादश उदाहरण (एक व्यञ्जनवाले अनेक शब्द)

क	कमलं	कलिका	कलशः	ख	खटिका	खट्वा	खदिरम्
	कमल ।	कली ।	कलश ।		खड़िया ।	खाट ।	खैर ।
ग	गगनं	गरुडः	गणितम्	घ	घटिका	घटना	घटकः
	आकाश ।	गरुड़ ।	गणित ।		घड़ी ।	घटना ।	दलाल ।
च	चरणं	चणकः	चटका	छ	छलना	छगलः	छुरिका
	पैर ।	चना ।	गौरैया		छल ।	बकरा ।	छूरी ।
ज	जननी	जनकः	जठरम्	झ	झञ्झा	झिरिका	झटिति
	माता ।	पिता ।	पेट ।		आँधी-पानी ।	झींगुर ।	झटपट ।
ट	लकुटी	शकटः	विटपः	ठ	कमठः	पिठरः	शठता
	छड़ी ।	छकड़ा ।	शाखा ।		कछुआ ।	बटलोही ।	दुष्टता ।
ड	डमरुः	डयनं	बडिशः	ढ	दृढ़ता	गाढः	मूढः
	डमरू ।	उड़ना ।	बंशी ।		मजबूती ।	गाढ़ा ।	मूर्ख ।
ण	विपणिः	गणकः	गणना	त	तरणिः	तुलसी	तिलकम्
	बाजार ।	ज्योतिषी ।	गिनती ।		नौका ।	तुलसी ।	तिलक ।
थ	कथनं	वमथुः	कथकः	द	दमनं	दयिता	दुहिता
	कहना ।	उल्टी ।	कहने वाला		दबाना ।	स्त्री ।	लड़की ।
थ	धरणी	धमनी	धनिकः	न	नगरं	नगरी	नकुलः
	पृथ्वी ।	नाड़ी ।	धनी ।		नगर ।	नगरी ।	न्यौला ।
प	पटलं	पथिकः	पुलकः	फ	फलकं	फलितं	फलिनी
	समूह ।	राही ।	रोमाञ्च ।		तख्ता ।	फला हुआ ।	एक लता ।

ब बडिशं बड़वा बदरी भ भवनं भुवनं भजनम्
वंशी । घोड़ी । बेर । घर । लोक । भजन ।

म मकरः मुकुटः मुशलम् य युवकः युवती यजनम्
मगर । मौर । मूसल । जवान । जवान स्त्री । यज्ञ ।

र रजतं रजनी रसना ल लगुडः लवणं लतिका
चाँदी । रात । जीभ । लाठी । नमक । लता ।

व वदनं वचनं वनिता श शकटः शकटी शलभः
मुँह । वचन-बोली । स्त्री । गाडी । छोटी गाडी । टिड्डी ।

ष विषयः विषमः सुषमा स सरसी सलिलं समितिः
विषय । कठिन । शोभा । सरोवर । पानी । सभा ।

ह हरिणः हरिणी हवनम्
मृग । मृगी । होम ।

त्रयोदश उदाहरण (एक व्यञ्जनवाली अनेक क्रियायें)

क कथयति कर्षति कुरुते ख खनते खादति खेलति
कहता है । खींचता है । करता है । खनता है । खाता है । खेलता है ।

ग गणयति गर्जति गायति घ घटयति घर्षति घूर्णति
गिनता है । गर्जता है । जाता है । गढ़ता है । घिसता है । घूमता है ।

च चर्वति चूषति च्यवते छ छलयति छुपति छिन्ते
चबाता है । चूसता है । चूता है । छलता है । छूना है । काटता है ।

ज जल्पति जीवति जिघ्रति झ झटति झषति झर्झति
बोलता है । जीता है । सूँघता है । जोड़ता है । मारता है । बोलता है ।

त तक्षति तनुते तुष्यति द दमयति ददते दशति
छीलता है। तानता है। तुष्ट होता है। दबाता है। देता है। डँसता है।

ध धत्ते धावति ध्यायति न नन्दति निवसति नृत्यति
धारण करता है। दोड़ता है। ध्यान करता है। खुश होता है। रहता है नाचता है

प पचति पुनीते पृच्छति फ फलति स्फोटति फुल्लति
पकाता है। पवित्र करता है। पूछता है। फलता है। फूटता है। फूलता है।

ब बोधति बुक्कति ब्रूते भ भ्राम्यति भुंक्ते भृज्जति
बूझता है। भूकता है। बोलता है। घूमता है। खाता है। भूजता है।

म मन्थति म्रियते मज्जति य यजति याचते यच्छति
मथता है। मरता है। डूबता है। यज्ञ करता है। माँगता है। देता है।

र रक्षति रचयति रोदिति ल लगति लज्जते लुण्ठति
रक्षा करता है। रचता है। रोता है। लगता है। लजाता है। लूटता है।

व वदति वन्दते वृश्चति श शपति शिक्षते शुष्यति
बोलता है। वन्दना करता है। काटता है। शाप देता है। सीखता है। सूखता है

स सहते सिञ्चति सीव्यति ह हसति हिण्डते हृष्यति
सहता है। सींचता है। सीता है। हसता है। घूमता है। खुश होता है

व्यञ्जन वर्णों की स्वराक्षरी (बारहखड़ी)

क कद्ली	का काकः	कि किरणः	की कीटः	कु कुम्भः	कू कूर्मः
केला	कौआ	किरन	कीड़ा	घड़ा	कछुआ
कृ कृषकः	के केशः	कै कैलाशः	को कोशः	कौ कौपीनम्	कं कंसः
किसान	बाल	एक पर्वत	खजाना	लँगोटा	कटोरा
ख खट्वा	खा खाद्यम्	खि खिन्नः	खी शाखी[1]	खु आखुः	खू आखूः
खाट	खाद्य	दुखी	पेड	चूहा	चूहिया
खृ खृष्टः	खे खेला	खै शङ्खैः[2]	खो खोलिः	खौ शंखौ[3]	खं खंजः
क्रिस्त	खेल	शंखों से	तरकस	दो शंख	लंगड़ा
ग गृध्रः	गा गावः[4]	गि गिरिजा	गी गीता	गु गुल्फः	गू गूथः
गरुड़	गायें	पार्वती	गीता	टखना	विष्ठा
गृ गृध्रः	गे गेहम्	गै गैरिकम्	गो गोपः	गौ गौरः	गं गंधः
गीध	घर	गेर	ग्वाला	गौरा	गन्ध
घ घट्टः	घा घासः	घि लघिमा[5]	घी संघी[6]	घु घुटिका	घू घूकः
घाट	घास	लघुता	संघी	घुट्‌ठी	उल्लू
घृ घृष्टिः	घे मेघे[7]	घै मेघैः[8]	घो घोलः	घौ मेघौ[9]	घं घंटा
घिसाई	मेघ में	मेघों से	घोल	दो मेघ	घंटा

१—शाखिन् । २, ३—शंख शब्द के तृतीया के बहुबचन और प्रथमा के द्विवचन का रूप । ४—गो शब्द का प्रथमा के बहुवचन का रूप । ५—लघिमन् । ६—संघिन् । ७, ८, ९—मेघ शब्दका सप्तमी एकवचन, मेघ शब्दके तृतीया बहुवचन, मेघ शब्दका प्रथमा द्विवचन का रूप ।

च चन्द्रः चा चापम् चि चिपुटः ची चीरम् चु चुल्ली चू चूडा

चन्द्रमा धनुष चिउड़ा कपड़ा चूल्ह चोटी

चृ याचृ[1] चे चेलम् चै चैत्रः चो चोरः चौ चौर्यम् चं चंचुः

माँगना कपड़ा चैत चोर चोरी चोंच

छ छन्दः[2] छा छागः छि छिद्रम् छी उच्छी[3] छु छुरिका छू कच्छूः

छन्द बकरा छेद हटाना छूरी खुजली

छृ च्छृदिर्[4] छे छेदः छै गुच्छैः[5] छो अच्छोदः छौ गुच्छौ[6] छं छं छं

चमकना टुकड़ा गुच्छों से तालाब दो गुच्छ छं छं

ज जठरम् जा जानुः जि जिह्वा जी जीवः जु जुष्टः जू जूटः

पेट घुटना जीभ जीव जूठा जूड़ा

जृ जृम्भा जे जेता जै जैनः जो जोषा जौ मुरजौ[7] जं जंघा

जँभाई विजयी जैन स्त्री दो मृदंग जंघा

झ झल्ली झा झाटः झि झिल्ली झी झीरूका झु झुमरिः झूणिः

ढोलकी झाड़ी झींगुर झींगुर एक गीत सुपारी

झृ जृझृ[8] झे उज्झेत्[9] झै उज्झैः[10] झो झोडः झौ झौलिकम् झं झंपा

नष्ट होना छोड़े छोड़ने से सुपारी झोली छलाँग

१, ३, ४, ८—एक धातु । २—छन्दस् । ५, ६—गुच्छ शब्द के तृतीया, बहुवचन तथा प्रथमा द्विवचन का रूप । ७—मुरज शब्द का प्रथमा, द्विवचव का रूप । ९—उज्झ धातु के लिङ् लकार प्र० पु० एकवचन का रूप । १०—उज्झ शब्द के तृतीया, बहुवचन का रूप ।

ट चटकः	टा घाटा	टि पुटिका	टी वाटी	टु वटुकः	टू चाटूक्तिः
गौरैया	घाँटी	पुड़िया	वाड़ी	ब्रह्मचारी	चाटुकारी
टृ यौटृ[१]	टे कीटे[२]	टै कीटैः[३]	टो टोपः	टौ अष्टौ	टं टंकः
बाँधना	कीड़े में	कीड़ों से	टोप	आठ	टाँकी
ठ कमठः	ठा काष्ठा	ठि कठिनम्	ठी पाठी[४]	ठु ठुमरिः	ठू शून्यम्
कछुआ	सीमा	कठिन	पढ़ने वाला	एक गीत	—
ठृ शून्यम्	ठे पाठे[५]	ठै पाठैः[६]	ठो कठोरः	ठौ पाठौ[७]	ठं ठं ठं[८]
—	पाठ में	पाठों से	कठोर	दो पाठ	ठं ठं
ड डमरुः	डा चूडा	डि डिम्भः	डी डीनम्	डु गडुकम्	डू अडूषः
डमरु	चोटी	बच्चा	उड़ान	गड़ुआ	अरूष
डृ तुडृ[९]	डे निगडे[१०]	डै निगडैः[११]	डो डोलः	डौ निगडौ[१२]	डं डंकः
तोड़ना	बेडी में	बेडियों से	डोल	दो बेडियाँ	डंक
ढ ढक्का	ढा ढालम्[१३]	ढि दाढिः	ढी दाढी	ढु ढुंढिः	ढू शून्यम्
ढाक	ढाल	दाढी	दाढी	ढोढ़ी	—
ढृ वोढृ	ढे ढेकारः	ढै मूढैः[१४]	ढो ढोलः	ढौ मूढौ[१५]	ढं ढं ढं[१६]
ढोने वाला	ढकार	मूर्खों से	ढोल	दो मूर्ख	ढं ढं

१, ९—एक धातु। २—कीट शब्द का सप्तमी एकवचन। ३—कीट शब्द का तृतीया बहुवचन। ४—पाठिन्। ५—पाठ शब्द का सप्तमी एकवचन। ६—पाठ शब्द का तृतीया बहुवचन। ७—पाठ शब्द का प्रथमा द्विवचन। ८—ध्वन्यात्मक। १०, ११, १२—निगड शब्द के सप्तमी एकवचन, तृतीया बहुवचन तथा प्रथमा द्विवचन के रूप। १३—अव्यय। १४, १५—मूढ शब्द के तृतीया बहुवचन तथा प्रथमा द्विवचन के रूप।

ण काणः   णा वीणा   णि तरणिः   णी गोणी   णु रेणुः   णू चाणूरः
काना   वीण   नाय   बोरा   धूल   एक राक्षस

णृ ओणृ[1]   णे गणेशः   णै प्राणैः[2]   णो णोनः   णौ गुणौघः   णं णं णं[4]
हटाना   गणेश   प्राणों से   एक सूत्र[3]   गुण-समूह   णं णं

त तक्रम्   ता तारा   ति तिलकम्   ती तीरम्   तु तुन्दम्   तू तूलम्
मट्ठा   तारा   तिलक   किनारा   तोंद   रुई

तृ तृष्णा   ते तेजः[5]   तै तैलम्   तो तोयम्   तौ तौलम्   तं तंकः
प्यास   तेज   तेल   पानी   तराजू   आतंक

थ ग्रन्थः   था कन्था   थि ग्रन्थिः   थी वीथी   थु वमथुः   थू थूत्कारः
ग्रन्थ   गुदडी   गाँठ   गली   वमन   थूक

थृ नाथृ[6]   थे ग्रन्थे[7]   थैः ग्रन्थैः[8]   थो पाथोजः   थौ ग्रन्थौघः   थं थं थं
माँगना   ग्रन्थ में   ग्रन्थों से   कमल   ग्रंथ-समूह   थं थं[9]

द दर्वी   दा दात्रम्   दि दिवसः   दी दीपः   दु दुहिता   दू दूर्वा
करछुल   दाँती   दिन   दीग्रा   लड़की   दूभ

दृ दृष्टिः   दे देवः   दै दैत्यः   दो दोला   दौ दौत्यम्   दं दंशः
नजर   देवता   दैत्य   डोला   दूतकार्य   डँस

१, ६—एक धातु। प्राण शब्द के तृतीया बहुवचन का रूप। ३—न को ण करनेवाला ४, ९—ध्वन्यात्मक। ५—तेजस्। ७—ग्रन्थ शब्द के सप्तमी एकवचन का रूप। ८—ग्रन्थ शब्द के तृतीया बहुवचन का रूप।

ध धमनी	धा धात्री	धि धिषणा	धी धीमान्[1]	धु धुर्यः	धू धूमः
नस	धाई	बुद्धि	बुद्धिमान्	भार ढोनेवाला	धूआँ
धृ धृष्टः	धे धेनुः	धै धैर्य्यम्	धो गन्धोली	धौ धौतम्	धं धं धं[2]
ढीठ	गाय	धीरता	बर्रे	धोया हुआ	धं धं
न नयनम्	ना नाभिः	नि निम्बः	नी नीरम्	नु नुन्नम्	नू नूनम्
आँख	नाभि	नीम	पानी	कटा हुआ	अवश्य
नृ नृपतिः	ने नेत्रम्	नै नैशम्	नो नोचेत्[3]	नौ नौका	नं नंदः
राजा	आँख	रात का	अन्यथा	नाथ	नाद
प पक्षी[4]	पा पात्रम्	पि पिटिका	पी पीठम्	पु पुष्पम्	पू पूगः
चिड़िया	बरतन	फुन्सी	पीढ़ा	फूल	सुपारी
पृ पृष्ठम्	पे पेशी	पै पैत्रम्	पो पोतः	पौ पौत्रः	पं पंकः
पीठ	पेशी	पुस्तैनी	जहाज	पोता	पाँक
फ फलकम्	फा फालः	फि गुंफितम्	फी स्फीतम्	फु फुल्लम्	फू फूत्कृ
तख्ता	फार	गूथा हुआ	बढ़ा हुआ	फूला हुआ	फूँकना
फृ शून्यम्	फे फेनः	फै रेफैः[5]	फो स्फोटः	फौ रेफौ[6]	फं फं फं[7]
—	फेन	रेफों से	फोड़ा	दो रेफ	फं फं

१—धीमत्। २, ७—अनुकरणात्मक। ३—अव्यय। ४—पक्षिन्। ५—रेफ शब्द के तृतीया बहुवचन का रूप। ६—रेफ शब्द के प्रथमा द्विवचन का रूप।

ब बन्धुः	बा बाहुः	बि बिल्वः	बी बीजम्	बु बुद्धः	बू शम्बूः
वन्धु	वाँह	वेल	बीज	महात्मा बुद्ध	घोंघा
बृ बृहती	बे बेड़ा	बै बैल्वम्	बो बोधिः	बौ बौद्धः	बं बं बं[1]
तम्बूरा	नाय	बेलका	ज्ञान	बुद्धानुयायी	बं बं
भ भस्त्रा	भा भार्या	भि भिक्षुः	भी भीमः	भु भुजगः	भू भूपः
भाथी	स्त्री	भिक्षुक	भीम	साँप	राजा
भृ भृङ्गः	भे भेकः	भै भैमी	भो भोगः	भौ भौमः	भं भंगा
भँवरा	मेढक	दमयन्ती	सुख भोग	मंगल	भाँग
म मशकः	मा माला	मि मित्रम्	मी मीनः	मु मुशलम्	मू मूकः
मच्छड़	माला	मित्र	मछली	मूसल	गूँगा
मृ मृगया	मे मेषः	मै मैत्री	मो मोदः	मौ मौनम्	मं मंडः
शिकार	भेड़	मित्रता	आनन्द	चुप्पी	माँड
य यवनः	या यागः	यि न्यायिन्[2]	यी गवयी	यु युगलम्	यू यूका
मुसलमान	यज्ञ	न्यायी	एक पशु	जोड़ा	जूँ
यृ चायृ[3]	ये प्रायेण[4]	यै न्यायैषी[5]	यो योगः	यौ यौनम्	यं यं यं
पूजना	प्रायः	न्याय चाहनेवाला	योग	विवाह	जिसको-जिलको

१—अनुकरणात्मक। २—न्यायी। ३—एक धातु। ४—अव्यय। ५—न्यायैषिन्।

र रजनी	रा राजा	रि रिक्तम्	री रीतिः	रु रुधिरम्	रू रूप्यम्
रात	राजा	खाली	रिवाज	खून	रुपया
रृ शून्यम्	रे रेखा	रै रैवतः	रो रोगः	रौ रौप्यम्	रं रंभा
—	रेखा	एक पर्वत	रोग	चाँदी	केला
ल लशुनम्	ला लाक्षा	लि लिक्षा	ली लीला	लु लुब्धः	लू लूता
लहसुन	लाख	लीख	लीला	लोभी	मकड़ी
लृ गम्लृ[1]	ले लेखा	लै लैङ्गम्	लो लोकः	लौ लौहम्	लं लंका
जाना	रेखा	लिङ्गपुराण	लोग, जगत	लोहा	लंका
व वदनम्	वा वायुः	वि विद्युत्	वी वीणा	वु चिवुकम्	वू वूर्णः
मुँह	हवा	बिजली	वीणा	ठुड्डी	चुना हुआ
वृ वृषभः	वे वेत्रम्	वै वैश्यः	वो वोढा[2]	वौ वौषट्[3]	वं वंशः
बैल	बेंत	वैश्य	ढोनेवाला	एक याज्ञिक शब्द	कुल
श शस्यम्	शा शाकः	शि शिविका	शी शीर्षम्	शु शुक्तिः	शू शूलम्
फसल	शाग	पालकी	मस्तक	सीप	शूल
शृ शृङ्गम्	शे शेषः	शै शैलः	शो शोथः	शौ शौचम्	शं शंखः
सींघ	बचा हुआ	पर्वत	सूजन	सफाई	शंख

१—एक धातु। २—वोढृ। ३—अव्यय।

ष षष्टिः	षा योषा	षि कृषिकः	षी महिषी	षु इषुधिः	षू कर्षूः
साठ	स्त्री	किसान	भैंस	तरकस	करसी
षृ जेषृ[1]	षे महिषे[2]	षै महिषैः[3]	षो षोडश	षौ महिषौ[4]	षं षंढः
जाना	भैंस पर	भैंसों से	सोलह	दो भैंसे	नपुंसक
स सरणिः	सा साधुः	सि सिन्धुः	सी सीमा	सु सुरभिः	सू सूत्रम्
रास्ता	साधु	समुद्र	सीमा	सुगन्ध	सूत
सृ सृष्टिः	से सेतुः	सै सैन्यम्	सो सोमः	सौ सौधम्	सं संध्या
सृष्टि	पुल	सेना	चन्द्रमा	अटारी	साँझ
ह हस्ती[5]	हा हारः	हि हिङ्गुः	ही हीरः	हु हुण्डः	हू हूणाः
हाथी	हार	हींग	हीरा	हुड्ड	हूण
हृ हृदयम्	हे हेम[6]	है हैमः	हो होमः	हौ हौम्यम्	हं हंसः
हृदय	सोना	सोने का	हवन	हवनसामग्री	हंस

---

१ –एक धातु। २-३-४ महिष शब्द के सप्तमी एक बचन, तृतीया बहुबचन तथा प्रथमा द्विबचन का रूप। ५ हस्तिन्। ६ हेमन्।

संयुक्ताक्षर-तालिका

क संयोग

(क के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् क क्क चिक्कण वि० चिकना ल् क ल्क शल्कम् छाल

ष् क ष्क शुष्क वि० सूखा हुआ स् क स्क तस्करः चोर

ग संयोग

(ग के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

द् ग द्ग उद्गमः उत्पत्ति ल् ग ल्ग वल्गा लगाम

च संयोग

(च के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

च् च च्च उच्च वि० ऊँचा श् च श्च निश्चयः निश्चय

छ संयोग

(छ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

च् छ च्छ तुच्छ वि० नाचीज श् छ श्छ शिरश्छेदः सिर काटना

ज संयोग

(ज के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ज् ज ज्ज कज्जलम् काजल ब् ज ब्ज अब्जम् कमल

झ संयोग

(झ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ज् झ ज्झ उज्झित वि० छोड़ा हुआ

ञ संयोग

(ञ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

च् ञ च्ञ याच्ञा माँग ज् ञ ज्ञ ज्ञानम् ज्ञान

ट संयोग

(ट के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ट् ट ट्ट भट्टः विद्वान् ष् ट ष्ट कष्टम् तकलीफ

ठ संयोग

(ठ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ष् ठ ष्ठ षष्ठिः साठ

ड संयोग

(ड के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ड् ड ड्ड उड्डयनम् उड़ान

ण संयोग

(ण के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् ण क्ण वृक्ण वि० कटा हुआ ग् ण ग्ण रुग्ण वि० रोगी

ण् ण ण्ण विषण्ण वि० दुःखी ष् ण ष्ण कृष्ण वि० काला

ह् ण ह्ण अपराह्णः दोपहर

त संयोग

(त के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् त क्त रक्तम् खून त् त त्त चित्तम् मन

प् त प्त प्राप्त वि० मिला हुआ स् त स्त हस्तः हाथ

थ संयोग

(थ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

त् थ त्थ उत्थानम् उठान स् थ स्थ स्थानम् जगह

द संयोग

(द के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

द् द द्द उद्दामः वि० बेलगाम ब् द ब्द शब्दः शब्द

ध संयोग

(ध के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ग् ध ग्ध दुग्धम् दूध

द् ध द्ध बुद्धिः बुद्धि

न संयोग

(न के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् न क्न शक्नोति सकता है

घ् न घ्न विघ्नः बाधा

न् न न्न अन्नम् अनाज

म् न म्न निम्न वि० नीचा

स न स्न स्नानम् स्नान

ग् न ग्न अग्निः आग

त् न त्न रत्नम् रत्न

प् न प्न स्वप्नः सपना

श् न श्न प्रश्नः प्रश्न

ह् न ह्न चिह्नम् चिह्न

प संयोग

(प के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

म् प म्प चम्पा चमेली

ल् प ल्प तल्प बिछौना

ष् प ष्प पुष्पम् फूल

स् प स्प वनस्पतिः वनस्पति

फ संयोग

(फ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

म् फ म्फ गुम्फः गुच्छ

ल् फ ल्फ गुल्फः घुट्टी

ब संयोग

(ब के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

म् ब म्ब लम्ब वि० लम्बा

भ संयोग

(भ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

द् भ द्भ उद्भवः उत्पत्ति

ल् भ ल्भ प्रगल्भ वि० ढीठ

म संयोग

(म के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् म	क्म	रुक्मम्	सोना	ग् म	ग्म	वाग्मी[2]	वक्ता
ङ् म	ङ्म	वाङ्मयम्	साहित्य	ड् म	ड्म	कुड्मलः	कली
ण् म	ण्म	षण्मुखः	कार्तिकेय	त् म	त्म	आत्मा[3]	आत्मा
द् म	द्म	पद्मम्	कमल	ध् म	ध्म	आध्मानम्	फूलना
न् म	न्म	जन्म[1]	जन्म	म् म	म्म	सम्मुखम्	सामने
ल् म	ल्म	वाल्मीकिः	वाल्मीकि	श् म	श्म	श्मश्रु	दाढ़ी-मूँछ
ष् म	ष्म	ग्रीष्मः	गर्मी	स् म	स्म	भस्म[4]	राख
ह् म	ह्म	ब्रह्मा[5]					

य संयोग

(य के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् य	क्य	वाक्यम्	वाक्य	ख् य	ख्य	मुख्य	वि० प्रधान
ग् य	ग्य	भाग्यम्	भाग्य	च् य	च्य	शोच्य	वि० शोचनीय
ज् य	ज्य	राज्यम्	राज्य	ट् य	ट्य	नाट्यम्	नाटक
ठ् य	ठ्य	पाठ्य	वि० पढ़ने योग्य	ड् य	ड्य	जाड्यम्	जड़ता
ढ् य	ढ्य	मौढ्यम्	मूर्खता	ण् य	ण्य	पुण्यम्	पुण्य
त् य	त्य	सत्यम्	सत्य	थ् य	थ्य	पथ्यम्	हितकर
द् य	द्य	विद्या	विद्या	ध् य	ध्य	बाध्य	वि० विवश
न् य	न्य	अन्य	वि० दूसरा	प् य	प्य	रौप्यम्	रूपा

नोट :—१—जन्मन्, २—वाग्मिन्, ३—आत्मन्, ४—भस्मन् ब्रह्मन् ।

भ् य भ्य सभ्य वि० सभ्य
य् य य्य शय्या सेज
व् य व्य नव्य वि० नया
ष् य ष्य शिष्यः विद्यार्थी
म् य म्य रम्य वि० सुन्दर
ल् य ल्य मूल्यम् कीमत
श् य श्य श्याम वि० साँवला
स् य स्य शस्यम् फसल
ह् य ह्य सह्य वि० सहनीय

र संयोग

(र के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क् र क्र नक्रः नाक
ज् र ज्र वज्रम् वज्र
त् र त्र नेत्रम् आँख
ध् र ध्र गृध्रः गीध
ब् र ब्र ब्रततिः लता
म् र म्र आम्रम् आम
श् र श्र श्रवणम् कान
घ् र घ्र शीघ्रम् अ० जल्दी
ढ् र ढ्र मेढ्रः मेंढा
द् र द्र निद्रा नींद
प् र प्र प्रीतिः प्रेम
भ् र भ्र भ्राता (तृ) भाई
व् र व्र व्रतम् व्रत
स् र स्र स्रवः टपकना
ह् र ह्र ह्रदः झील

रेफ संयोग

(रेफ ॅ के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

ॅ ऋ र्ऋ नैर्ऋत्य दक्षिण-पश्चिम कोण
ॅ ख र्ख मूर्खः वि० मूर्ख
ॅ घ र्घ दीर्घ वि० लम्बा
ॅ क र्क अर्कः सूर्य
ॅ ग र्ग दुर्गा दुर्गा
ॅ च र्च अर्चा पूजा

र्	छ	र्छ	मूर्छा	बेहोशी
र्	झ	र्झ	निर्झरः	झरना
र्	थ	र्थ	अर्थः	धन, माने
र्	ध	र्ध	निर्धन	वि० गरीब
र्	प	र्प	शूर्पः	सूप
र्	भ	र्भ	निर्भय	वि० निडर
र्	य	र्य	निर्यासः	गोंद
र्	व	र्व	दुर्वासा[1]	एक ऋषि
र्	ष	र्षः	हर्षः	खुशी
र्	ज	र्ज	दुर्जनः	दुष्ट
र्	ण	र्ण	कर्णः	कान
र्	द्	र्द्र	आर्द्र	वि० गीला
र्	न	र्न	दुर्नाम[2]	बदनामी
र्	ब	र्ब	दुर्बोध	वि० गँवार
र्	म	र्म	निर्माणम्	रचना
र्	ल	र्ल	दुर्लभ	वि० दुर्लभ
र्	श	र्श	दर्शनम्	दर्शन
र्	ह	र्ह	अर्ह	वि० योग्य

ल संयोग

(ल के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क्	ल	क्ल	शुक्ल	वि० सफेद
प्	ल	प्ल	प्लीहा	पिलही
ल्	ल	ल्ल	पल्लवः	पल्लव
ग्	ल	ग्ल	ग्लानिः	कष्ट
म्	ल	म्ल	म्लान	वि० मुरझाहुआ
श्	ल	श्ल	श्लोकः	श्लोक
ह्	ल	ह्ल	आह्लादः	खुशी

व संयोग

(व के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

क्	व	क्व	पक्व	वि० पका हुआ
ट्	व	ट्व	खट्वा	खाट
द्	व	द्व	द्वारम्	दरवाजा
न्	व	न्व	अन्वयः	वंश
ज्	व	ज्व	ज्वरः	ज्वर
त्	व	त्व	त्वरा	जल्दी
ध्	व	ध्व	ध्वनिः	आवाज
ल्	व	ल्व	विल्वः	बेल

नोट—१—दुर्वासस्, २—दुर्नामन् ।

श् व श्व अश्वः घोड़ा   ष् व ष्व विष्वक् (अव्यय) चारों ओर

ह् व ह्व जिह्वा जीभ

स संयोग

(स के साथ अन्य वर्णों का संयोग)

त् स त्स उत्सवः उत्सव   प् स प्स अप्सराः अप्सरा

पञ्चमवर्ण संयोग

(कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग के साथ पञ्चम वर्णों का संयोग)

ङ् क ङ्क अङ्कः संख्या   ङ् ख ङ्ख शङ्खः शंख

ङ् ग ङ्ग सङ्गः सङ्गति   ङ् घ ङ्घ सङ्घः समूह

ञ् च ञ्च काञ्ची करधनी   ञ् छ ञ्छ वाञ्छा इच्छा

ञ् झ ञ्झ झञ्झा आँधी-पानी   ञ् ज ञ्ज अञ्जनम् आँजन

ण् ट ण्ट घण्टा घण्टा   ण् ठ ण्ठ कण्ठः कंठ

ण् ड ण्ड दण्डः   ण् ढ ण्ढ शण्ढः साँढ़

ण् ण ण्ण तृण्ण वि० कटा हुआ   न् त न्त दन्तः दाँत

न् थ न्थ ग्रन्थः ग्रन्थ   न् द न्द मन्द वि० धीरा

न् ध न्ध अन्धः अन्धा   न् न न्न अन्नम् अन्न

म् ब म्ब अम्बा अम्मा   म् भ म्भ शम्भुः शिव

म् म म्म सम्मतिः राय

तीन वर्णों का संयोग

क् ष् ण	क्ष्ण	तीक्ष्ण	वि० तीखा	ज् ज् व	ज्ज्व	उज्ज्वल	उजला
ङ् क् ष	ङ्क्ष	काङ्क्षा	इच्छा	त् त् व	त्त्व	तत्त्वम्	असलीयत
त् त् र	त्त्र	छात्त्रः	विद्यार्थी	न् त् र	न्त्र	मन्त्रः	मन्त्र
त् म् य	त्म्य	माहात्म्यम्	महत्व	न् द् र	न्द्र	चन्द्रः	चन्द्रमा
न् त् व	न्त्व	सान्त्वना	तसल्ली	म् प् र	म्प्र	सम्प्रति	अ० इस समय
न् ध् य	न्ध्य	विन्ध्यः	विन्ध्य पहाड़	र् च् च	र्च्च	अर्च्चा	पूजा
म् भ् र	म्भ्र	सम्भ्रमः	सम्मान	र् ज् ज	र्ज्ज	गर्ज्जनम्	गरजना
र् च् छ	र्च्छ	मूर्च्छा	वेहोशी	र् व् व	र्व्व	गर्व्वः	घमंड
र् द् द	र्द्द	कर्द्दमः	पाँक	ष् ट् र	ष्ट्र	राष्ट्रम्	राष्ट्र
र् म् म	र्म्म	कर्म्म	काम	स् त् र	स्त्र	अस्त्रम्	हथियार
र् य् य	र्य्य	आर्य्य	वि० श्रेष्ठ	र् श् व	र्श्व	पार्श्वम्	बगल
ष् प् र	ष्प्र	निष्प्रयोजनम्	बेकाम	क् ष् म	क्ष्म	लक्ष्मीः	लक्ष्मी

चार वर्णों का संयोग

र् द् ध् व	र्द्ध्व	ऊर्द्ध्वम्	अ० ऊपर	र् द् ध् य	र्द्ध्य	परार्द्ध्य	सर्वोच्च संख्या

पांच वर्णों का संयोग

र् त् स् न् य र्त्स्न्य कार्त्स्न्यम् सम्पूर्णता

संख्यावाचक संस्कृत शब्द

(प्रार्थना के बाद छात्रों से हिन्दी की तरह संस्कृत में भी गिनती करानी चाहिये जिससे सभी छात्रों को संख्याशब्दों का अच्छी तरह ज्ञान हो जाय)

एक	१	एकविंशति	२१	एकचत्वारिंशत्	४१
द्वि	२	द्वाविंशति	२२	द्विचत्वारिंशत्	४२
त्रि	३	त्रयोविंशति	२३	त्रिचत्वारिंशत्	४३
चतुर्	४	चतुर्विंशति	२४	चतुश्चत्वारिंशत्	४४
पञ्चन्	५	पञ्चविंशति	२५	पञ्चचत्वारिंशत्	४५
षष्	६	षड्विंशति	२६	षट्चत्वारिंशत्	४६
सप्तन्	७	सप्तविंशति	२७	सप्तचत्वारिंशत्	४७
अष्टन्	८	अष्टाविंशति	२८	अष्टचत्वारिंशत्	४८
नवन्	९	ऊनत्रिंशत्	२९	ऊनपञ्चाशत्	४९
दशन्	१०	त्रिंशत्	३०	पञ्चाशत्	५०
एकादशन्	११	एकत्रिंशत्	३१	एकपञ्चाशत्	५१
द्वादशन्	१२	द्वात्रिंशत्	३२	द्विपञ्चाशत्	५२
त्रयोदशन्	१३	त्रयस्त्रिंशत्	३३	त्रिपञ्चाशत्	५३
चतुर्दशन्	१४	चतुस्त्रिंशत्	३४	चतुःपञ्चाशत्	५४
पञ्चदशन्	१५	पञ्चत्रिंशत्	३५	पञ्चपञ्चाशत्	५५
षोडशन्	१६	षट्त्रिंशत्	३६	षट्पञ्चाशत्	५६
सप्तदशन्	१७	सप्तत्रिंशत्	३७	सप्तपञ्चाशत्	५७
अष्टादशन्	१८	अष्टात्रिंशत्	३८	अष्टपञ्चाशत्	५८
ऊनविंशति	१९	ऊनचत्वारिंशत्	३९	ऊनषष्टि	५९
विंशति	२०	चत्वारिंशत्	४०	षष्टि	६०

एकषष्टि	६१	षट्सप्तति	७६	नवति	९०
द्विषष्टि	६२	सप्तसप्तति	७७	एकनवति	९१
त्रिषष्टि	६३	अष्टसप्तति	७८	द्विनवति	९२
चतुःषष्टि	६४	ऊनाशीति	७९	त्रिनवति	९३
पञ्चषष्टि	६५	अशीति	८०	चतुर्णवति	९४
षट्षष्टि	६६	एकाशीति	८१	पञ्चनवति	९५
सप्तषष्टि	६७	द्व्यशीति	८२	षण्णवति	९६
अष्टषष्टि	६८	त्र्यशीति	८३	सप्तनवति	९७
ऊनसप्तति	६९	चतुरशीति	८४	अष्टनवति	९८
सप्तति	७०	पञ्चाशीति	८५	नवनवति	९९
एकसप्तति	७१	षडशीति	८६	शत	१००
द्विसप्तति	७२	सप्ताशीति	८७	सहस्र	१०००
त्रिसप्तति	७३	अष्टाशीति	८८	लक्ष	१०००००
चतुःसप्तति	७४	ऊननवति	८९	कोटि	१०००००००
पञ्चसप्तति	७५				

पूरणार्थक संख्यावाचक शब्द

(प्रार्थना के बाद छात्रों को पहले की भाँति इन शब्दों से भी गिनती करानी चाहिए जिससे छात्रों को इन शब्दों का भी अच्छा अभ्यास हो जाय)

प्रथम	पहला	पञ्चविंशतितम	पचीसवाँ
द्वितीय	दूसरा	षड्विंशतितम	छब्बीसवाँ
तृतीय	तीसरा	सप्तविंशतितम	सत्ताइसवाँ
चतुर्थ	चौथा	अष्टाविंशतितम	अट्ठाइसवाँ
पञ्चम	पाचवाँ	ऊनत्रिंशत्तम	उन्तीसवाँ
षष्ठ	छठवाँ	त्रिंशत्तम	तीसवाँ
सप्तम	सातवाँ	एकत्रिंशत्तम	इक्तीसवाँ
अष्टम	आठवाँ	द्वात्रिंशत्तम	बत्तीसवाँ
नवम	नवाँ	त्रयस्त्रिंशत्तम	तैतीसवाँ
दशम	दसवाँ	चतुस्त्रिंशत्तम	चौतीसवाँ
एकादश	ग्यारहवाँ	पञ्चत्रिंशत्तम	पैतीसवाँ
द्वादश	बारहवाँ	षट्त्रिंशत्तम	छत्तीसवाँ
त्रयोदश	तेरहवाँ	सप्तत्रिंशत्तम	सैंतीसवाँ
चतुर्दश	चौदहवाँ	अष्टात्रिंशत्तम	अड़तीसवाँ
पञ्चदश	पन्द्रहवाँ	ऊनचत्वारिंशत्तम	उन्तालिसवाँ
षोडश	सोलहवाँ	चत्वारिंशत्तम	चालीसवाँ
सप्तदश	सत्रहवाँ	एकचत्वारिंशत्तम	इक्तालीसवाँ
अष्टादश	अट्ठारहवाँ	द्विचत्वारिंशत्तम	बयालीसवाँ
ऊनविंशतितम	उन्नीसवाँ	त्रिचत्वारिंशत्तम	तैतालीसवाँ
विंशतितम	बीसवाँ	चतुश्चत्वारिंशत्तम	चौवालीसवाँ
एकविंशतितम	इक्कीसवाँ	पञ्चचत्वारिंशत्तम	पैतालीसवाँ
द्वाविंशतितम	बाइसवाँ	षट्चत्वारिंशत्तम	छियालीसवाँ
त्रयोविंशतितम	तेइसवाँ	सप्तचत्वारिंशत्तम	सैंतालीसवाँ
चतुर्विंशतितम	चौबीसवाँ	अष्टचत्वारिंशत्तम	अड़तालीसवाँ

ऊनपञ्चाशत्तम	उन्चासवाँ	पञ्चसप्ततितम	पचहत्तरवाँ
पञ्चाशत्तम	पचासवाँ	षट्सप्ततितम	छिहत्तरवाँ
एकपञ्चाशत्तम	इक्यावनवाँ	सप्तसप्ततितम	सतहत्तरवाँ
द्विपञ्चाशत्तम	बावनवाँ	अष्टसप्ततितम	अठहत्तरवाँ
त्रिपञ्चाशत्तम	तिरपनवाँ	ऊनाशीतितम	उन्नासिवाँ
चतुःपञ्चाशत्तम	चौवनवाँ	अशीतितम	अस्सिवाँ
पञ्चपञ्चाशत्तम	पचपनवाँ	एकाशीतितम	एकासिवाँ
षट्पञ्चाशत्तम	छप्पनवाँ	द्व्यशीतितम	बयासिवाँ
सप्तपञ्चाशत्तम	सन्तावनवाँ	त्र्यशीतितम	तिरासिवाँ
अष्टपञ्चाशत्तम	अट्ठावनवाँ	चतुरशीतितम	चौरासिवाँ
ऊनषष्टितम	उनसठवाँ	पञ्चाशीतितम	पचासिवाँ
षष्टितम	साठवाँ	षडशीतितम	छियासिवाँ
एकषष्टितम	एकसठवाँ	सप्ताशीतितम	सत्तासिवाँ
द्विषष्टितम	बासठवाँ	अष्टाशीतितम	अठासिवाँ
त्रिषष्टितम	तिरसठवाँ	ऊननवतितम	उन्यासिवाँ
चतुःषष्टितम	चौसठवाँ	नवतितम	नब्बवाँ
पञ्चषष्टितम	पैसठवाँ	एकनवतितम	इक्यानवाँ
षट्षष्टितम	छाछठवाँ	द्विनवतितम	बानवाँ
सप्तषष्टितम	सरसठवाँ	त्रिनवतितम	तिरानवाँ
अष्टषष्टितम	अड़सठवाँ	चतुर्नवतितम	चौरानवाँ
ऊनसप्ततितम	उरहत्तरवाँ	पञ्चनवतितम	पञ्चानवाँ
सप्ततितम	सत्तरवाँ	षण्णवतितम	छियानवाँ
एकसप्ततितम	एकहत्तरवाँ	सप्तनवतितम	सत्तानवाँ
द्विसप्ततितम	बहत्तरवाँ	अष्टनवतितम	अट्ठानवाँ
त्रिसप्ततितम	तिहत्तरवाँ	नवनवतितम	निन्यानवाँ
चतुःसप्ततितम	चौहत्तरवाँ	शततम	सौवाँ
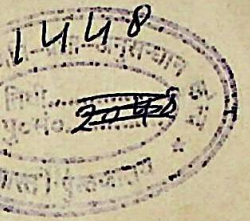
प्रस्तार (पहाड़ा)

एक का पहाड़ा

एककम्	एक	१
द्विकम्	द्वि	२
त्रिकम्	त्रि	३
चतुष्कम्	चतुर्	४
पञ्चकम्	पञ्चन्	५
षट्कम्	षष्	६
सप्तकम्	सप्तन्	७
अष्टकम्	अष्टन्	८
नवकम्	नवन्	९
दशकम्	दशन्	१०

दो का पहाड़ा

द्विकम्	द्वि	२
द्विद्विकम्	चतुर्	४
द्वित्रिकम्	षष्	६
द्विचतुष्कम्	अष्टन्	८
द्विपञ्चकम्	दशन्	१०
द्विषट्कम्	द्वादशन्	१२
द्विसप्तकम्	चतुर्दशन्	१४
द्वि-अष्टकम्	षोडशन्	१६
द्विनवकम्	अष्टादशन्	१८
द्विदशकम्	विंशति	२०

तीन का पहाड़ा

त्रिकम्	त्रि	३
त्रिद्विकम्	षष्	६
त्रित्रिकम्	नवन्	९
त्रिचतुष्कम्	द्वादशन्	१२
त्रिपञ्चकम्	पञ्चदशन्	१५
त्रिषट्कम्	अष्टादशन्	१८
त्रिसप्तकम्	एकविंशति	२१
त्रि-अष्टकम्	चतुर्विंशति	२४
त्रिनवकम्	सप्तविंशति	२७
त्रिदशकम्	त्रिंशत्	३०

चार का पहाड़ा

चतुष्कम्	चतुर्	४
चतुर्द्विकम्	अष्टन्	८
चतुस्त्रिकम्	द्वादशन्	१२
चतुश्चतुष्कम्	षोडशन्	१६
चतुःपञ्चकम्	विंशति	२०
चतुःषट्कम्	चतुर्विंशति	२४
चतुःसप्तकम्	अष्टाविंशति	२८
चतुरष्टकम्	द्वात्रिंशत्	३२
चतुर्नवकम्	षट्त्रिंशत्	३६
चतुर्दशकम्	चत्वारिंशत्	४०

पाँच का पहाड़ा

पञ्चकम्	पञ्चन्	५
पञ्चद्विकम्	दशन्	१०
पञ्चत्रिकम्	पञ्चदशन्	१५
पञ्चचतुष्कम्	विंशति	२०
पञ्चपञ्चकम्	पञ्चविंशति	२५
पञ्चषट्कम्	त्रिंशत्	३०
पञ्चसप्तकम्	पञ्चत्रिंशत्	३५
पञ्चाष्टकम्	चत्वारिंशत्	४०
पञ्चनवकम्	पञ्चचत्वारिंशत्	४५
पञ्चदशकम्	पञ्चाशत्	५०

सात का पहाड़ा

सप्तकम्	सप्तन्	७
सप्तद्विकम्	चतुर्दशन्	१४
सप्तत्रिकम्	एकविंशति	२१
सप्तचतुष्कम्	अष्टाविंशति	२८
सप्तपञ्चकम्	पञ्चत्रिंशत्	३५
सप्तषट्कम्	द्विचत्वारिंशत्	४२
सप्तसप्तकम्	ऊनपञ्चाशत्	४९
सप्ताष्टकम्	षट्पञ्चाशत्	५६
सप्तनवकम्	त्रिषष्टि	६३
सप्तदशकम्	सप्तति	७०

छ का पहाड़ा

षट्कम्	षष्	६
षट्द्विकम्	द्वादशन्	१२
षट्त्रिकम्	अष्टादशन्	१८
षट्चतुष्कम्	चतुर्विंशति	२४
षट्पञ्चकम्	त्रिंशत्	३०
षट्षट्कम्	षट्त्रिंशत्	३६
षट्सप्तकम्	द्विचत्वारिंशत्	४२
षडष्टकम्	अष्टचत्वारिंशत्	४८
षड्नवकम्	चतुःपञ्चाशत्	५४
षड्दशकम्	षष्टि	६०

आठ का पहाड़ा

अष्टकम्	अष्टन्	८
अष्टद्विकम्	षोडशन्	१६
अष्टत्रिकम्	चतुर्विंशति	२४
अष्टचतुष्कम्	द्वात्रिंशत्	३२
अष्टपञ्चकम्	चत्वारिंशत्	४०
अष्टषट्कम्	अष्टचत्वारिंशत्	४८
अष्टसप्तकम्	षट्पञ्चाशत्	५६
अष्टाष्टकम्	चतुःषष्टि	६४
अष्टनवकम्	द्वासप्तति	७२
अष्टदशकम्	अशीति	८०

नौ का पहाड़ा

नवकम्	नवन्	९
नवद्विकम्	अष्टादशन्	१८
नवत्रिकम्	सप्तविंशति	२७
नवचतुष्कम्	षट्त्रिंशत्	३६
नवपञ्चकम्	पञ्चचत्वारिंशत्	४५
नवषट्कम्	चतुःपञ्चाशत्	५४
नवसप्तकम्	त्रिषष्टि	६३
नवाष्टकम्	द्विसप्तति	७२
नवनवकम्	एकाशीति	८१
नवदशकम्	नवति	९०

दश का पहाड़ा

दशकम्	दशन्	१०
दशद्विकम्	विंशति	२०
दशत्रिकम्	त्रिंशत्	३०
दशचतुष्कम्	चत्वारिंशत्	४०
दशपञ्चकम्	पञ्चाशत्	५०
दशषट्कम्	षष्टि	६०
दशसप्तकम्	सप्तति	७०
दशाष्टकम्	अशीति	८०
दशनवकम्	नवति	९०
दशदशकम्	शत	१००